Session 2026–27

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)
I Year
Regular

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	Practical – II Stage Performance	100	33
	Grand Total	400	

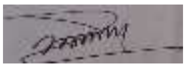 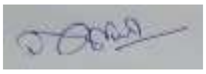 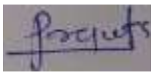

सत्र 2026–27
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट
प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र
प्रथम प्रश्न पत्र

समयः 3 घण्टे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

तबले के संदर्भ में घराना और बाज की व्याख्या। तबले के समस्त घरानों का विस्तृत ऐतिहासिक अध्ययन।

इकाई 2

निम्नलिखित शास्त्रकारों के सांगीतिक योगदान का परिचयः– स्वाति, भरत, मंतग, शारंगदेव, महाराणा कुंभा, पार्श्वदेव, व्यंकटमखी, महाराजा सवाई, प्रताप सिंह देव।

इकाई 3

उत्तर एवं दक्षिण भारतीय लोक संगीत के प्रमुख अवनद्व एवं घन वाद्यों की जानकारीः–खंजरी, डमरू, नक्कारा, ढ़ोल, ढ़ोलक, डफ, डफली, नाल, खोल, कांस्य ताल, घड़ियाल, घटम, मुखचंग, करताल, झांझ।

इकाई 4

निम्नलिखित वाद्यों के विकास का ऐतिहासिक परिचयः– दुंदुभि, पणव, पटह, दर्दुर, मृदंग, ड़मरू। वाद्यों के वर्गीकरण के सिद्वांत का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई 5

उत्तर भारतीय ताल पद्वतियों का विस्तृत अध्ययन। उत्तर भारतीय ताल पद्धति तथा कर्नाटक ताल पद्वति का तुलनात्मक अध्ययन।

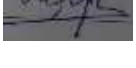
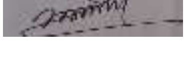
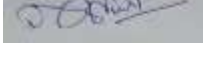
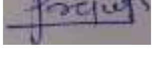

सत्र 2026–27
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट
प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र
द्वितीय प्रश्न पत्र

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

पं. भातखण्डे व पं. पलुस्करताललिपि पद्वतियों का विस्तृत अध्ययन। पाश्चात्य ताललिपि पद्वति का सामान्य ज्ञान।

इकाई 2

सुगम एवं लोक संगीत के साथ तबला संगति के सिंद्वातों का अध्ययन। संगीत संबंधी किसी विषय पर निंबध लेखन।

इकाई 3

त्रिताल, तिलवाड़ा, सवारी (15 मात्रा), गजझम्पा, आड़ाचौताल, धमार, दीपचंदी, झूमरा, एकताल, चौताल, झपताल, सूलताल, कहरवा, रूपक, तीव्रा, दादरा इन तालों को विभिन्न लयकारियों में ताललिपि में लिखने का अभ्यास :– जैसे – पौनगुन, सवागुन पौने दो गुन, सवा दो गुन।

इकाई 4

तिहाई एवं चक्रदार रचनाओं का गणितीय विवेचन तथा दिये गये बोलों के आधार पर तिहाई एवं चक्रदार की रचना कर ताल लिपि में लिपिबद्ध करना।

इकाई 5

पेशकार, कायदा, रेला, तथा लग्गी के रचना एवं विस्तार सिद्धांतों का अध्ययन।

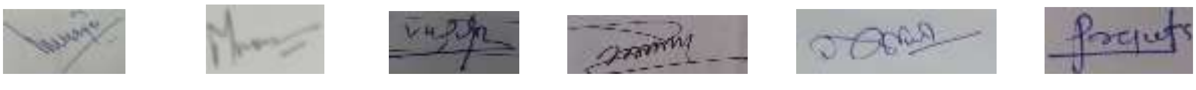

सत्र 2026–27
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट
प्रथम वर्ष
क्रियात्मक (वायवा)

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, झपताल तथा एकताल में संपूर्ण स्वतंत्र वादन (विभिन्न प्रकार के कायदों, रेले, गतों, परनों, टुकड़ों, चक्करदार, तथा तिहाईयों सहित)।
2. 11 मात्रा तथा पंचम सवारी (15 मात्रा) में सम्पूर्ण वादन।
3. ठेको के माध्यम से लयकारी का प्रदर्शन :– त्रिताल, झपताल, रूपक, और एकताल इन तालों के ठेके परस्पर एक आवर्तन के हिसाब से बजाने का अभ्यास।
4. घरानों की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हुए विभिन्न घरानों की बंदिशों को पढ़ने व बजाने का अभ्यास।
5. झूमरा, एकताल, त्रिताल, दीपचंदी, तिलवाड़ा, झपताल, आड़ाचौताल, तीव्रा, सूलताल व धमार इन तालों के ठेके संगत की दृष्टि से उपयुक्त लयों में निरंतर बजाने का अभ्यास।
6. सुगम संगीत में प्रयुक्त तालों के विभिन्न ठेके तथा लग्गियां, लड़ियां और तिहाईयां बजाने का अभ्यास।

नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष
क्रियात्मक (मंच प्रदर्शन)

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1 आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष तबला स्वत्रंत वादन का प्रदर्शन :–

(अ) त्रिताल, झपताल, रूपक तथा एकताल में से किसी एक ताल में न्यूनतम 20 मिनट तबला वादन। (10 मिनिट परीक्षार्थी की इच्छानुसार एवं 10 मिनिट परीक्षक के निर्देशानुसार)

(ब) 11 मात्रा तथा सवारी में से किसी एक ताल में न्यूनतम 10 मिनट वादन।

2 तबला वाद्य को स्वर मे मिलाने का ज्ञान।

3 गायन/वादन के साथ तबला संगति का प्रदर्शन।

:संदर्भ सूचीः

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास जी
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. तबला वाद्य शास्त्र – डॉ. एम. बी. मराठे
5. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ. अरूण कुमार सेन
6. ताल वाद्यों की आवश्यकता एवं उपयोगिता– डॉ. चित्रा गुप्ता
7. तबला वादन के घराने एवं परम्पराऍं – डॉ. अबान मिस्त्री
8. भारतीय संगीत वाद्य – डॉ. लालमणि मिश्र
9. ताल परिचय भाग–3 – पं. गिरीषचन्द्र श्रीवास्तव

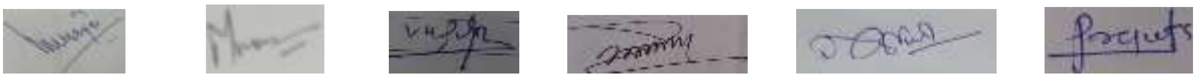

Session 2027–28

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)
Final Year
Regular

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	II Stage Performance	100	33
	Grand Total	400	

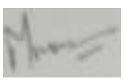

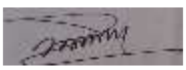
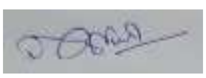
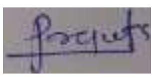

सत्र 2027—28
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट—अंतिम वर्ष
तबला
प्रथम प्रश्नपत्र (भारतीय संगीत का इतिहास)

समयः 3 घंटे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

पखावज एवं तबला का इतिहास एवं विकास। पखावज के घरानों का अध्ययन।

इकाई 2

अवनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति के ऐतिहासिक विकासक्रम का विस्तृत अध्ययन। प्राचीन शास्त्रों में वर्णित अवनद्ध वाद्य वादकों के गुण—दोष।

इकाई 3

प्राचीन व मध्ययुगीन ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाद्यों के बोल (पटाक्षर) व उनकी रचनाओं का सामान्य ज्ञान। अवनद्ध वाद्यों की वादन विधि से संबंधित नाट्यशास्त्र में वर्णित पारिभाषिक शब्दों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई 4

मार्गी और देशी ताल पद्वति का विस्तृत अध्ययन। प्राचीन एवं वर्तमान ताल पद्धतियों की समानताएं एवं विभिन्नताएं।

इकाई 5

निम्नलिखित पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों का सचित्र वर्णन तथा इनका भारतीय अवनद्ध वाद्यों से तुलनात्मक अध्ययन— कीटल ड्रम, टेनर ड्रम, स्नेअर ड्रम तथा बास ड्रम।

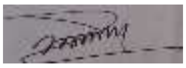 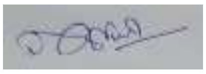 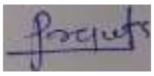

सत्र 2027–28
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष
तबला
द्वितीय प्रश्न पत्र–संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

छन्द की परिभाषा। मात्रिक, वार्णिक एवं मुक्त छन्द। ताल और छन्द का पारस्परिक संबंध। तबले की बंदिशों में छन्दात्मकता।

इकाई 2

स्वतंत्र तबला वादन के सिद्धांतों का अध्यय। संगीत संबंधी किसी विषय पर निंबध।

इकाई 3

दिये गये बोलो के आधार पर कायदा, रेला, तिहाई तथा टुकड़ा आदि की रचना कर ताल लिपि में लिखना। किसी ताल में अन्य तालों के ठेके को (सम से सम तक) समायोजित कर लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

इकाई 4

9, 11, 13, पंचम सवारी (पन्द्रह मात्रा) तथा 17 मात्रा में विभिन्न प्रकार की बंदिशों को लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

इकाई 5

गत एवं परन के विभिन्न प्रकारों का सोदाहरण अध्ययन। तंत्र वाद्यों के साथ तबला संगति सिद्धांत का अध्ययन।

सत्र 2027—28
नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट—अंतिम वर्ष
क्रियात्मक (वायवा)

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, रूपक, झपताल और एकताल में संपूर्ण एकल वादन। (विभिन्न प्रकार के कायदों, रेलों, गतों परनों, टुकड़ों, चक्करदार तथा तिहाईयों सहित)
2. 9 तथा 13 मात्रा के तालों में संपूर्ण स्वतंत्र वादन।
3. ठेकों के माध्यम से लयकारी का प्रदर्शन।
4. बंदिशों का विश्लेषणात्मक विवेचन करते हुए घरानेदार बंदिशों को पढ़ने व बजाने का अभ्यास।
5. सुगम संगीत में प्रयुक्त आधुनिक ठेके तथा लग्गियां, लड़ियां व तिहाईयां बजाने का अभ्यास।
6. शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त सभी ठेके संगत की दृष्टि से अपेक्षित लयों में निरन्तर बजाने का अभ्यास।

नियमित परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट—अंतिम वर्ष
क्रियात्मक (मंच प्रदर्शन)

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

1. आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष तबला स्वत्रंत वादन का प्रदर्शन :—

   (अ) रूपक, झपताल तथा एकताल में से परीक्षार्थी की इच्छानुसार किसी एक ताल में एकल वादन।

   (ब) 9 तथा 13 मात्रा में से किसी एक ताल में परीक्षक की इच्छानुसार एकल वादन।

2 तबला स्वर मे मिलाने का ज्ञान।

3 गायन/वादन/नृत्य के साथ तबला संगति का प्रदर्शन।

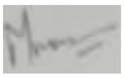

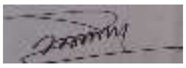
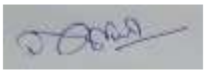
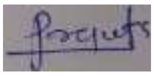

:संदर्भ सूचीः

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास जी
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. तबला वाद्य शास्त्र – डॉ. एम. बी. मराठे
5. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ. अरूण कुमार सेन
6. ताल वाद्यों की आवश्यकता एवं उपयोगिता – डॉ. चित्रा गुप्ता
7. तबला वादन के घराने एवं परम्पराएँ – डॉ. अबान मिस्त्री
8. भारतीय संगीत वाद्य – डॉ. लालमणि मिश्र
9. ताल परिचय भाग–3 – पं. गिरीषचन्द्र श्रीवास्तव